# धर्म या मज़हब

## भाग – १

अकाल पुरुष परमेश्वर —

प्रेम-पुरुष है ।
अति-प्रीतम है ।
प्रेम स्वरूप है ।

इसलिए उसका '**हुकुम**', '**कवाउ**', '**बाणी**' भी असीम, सम्पूर्ण तथा '**प्रेम-मयी**' है ।

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ।। (पृ. २)
हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ।। (पृ. ४४९)
प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु ।। (पृ. ६४०)

इस प्रकार अकाल पुरुष **'प्रेम-स्वरूप' होकर,** समस्त सृष्टि मेa '**शबद**' द्वारा रवि-रहिआ-परिपूर्ण है —

रaगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ।। (पृ. २३)
आपे हुकमि वरतदा पिआरा आपे ही फुरमाणु ।। (पृ. ६०६)
जत्र तत्र दिसा विसा होइ फैलिओ अनुराग ।। (जापु पा. १०)

अकाल पुरुष की ज्योति-स्वरूप, '**प्रेम किरण**', सृष्टि के समस्त जीवोa मेa परिपूर्ण है । दूसरे शब्दोa मेa सृष्टि की प्रत्येक वस्तु तथा जीवोa मेa भी, दैवीय आत्मिक **प्रीत-प्रेम-प्यार का प्रतिबिम्ब झलकता** है ।

इसी ईश्वरीय —

प्रेम आकर्षण
प्रेम आकaक्षा
प्रीत-डोरी
नेहु-नवेला (नित्य नवीन प्रेम)

द्वारा प्रत्येक 'जीव' तथा सृष्टि का कण-कण, अपने केन्द्र अकाल पुरुष की ओर, दिव्य प्रीत-तार से, निरन्तर खिaचता जा रहा है।

मू लालन सिउ प्रीति बनी ।। रहाउ।।
तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिaच तनी ।। (पृ ८२७)

इसी दिव्य 'प्रीत-डोरी' द्वारा, प्रत्येक वस्तु या जीव, एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं।

Like attracts like.

धातु मिलै फुनि धातु कउ लिव लिवै कउ धावै ।। (पृ ७२५)

इसी —

प्रीत-डोरी
प्रीत-तार
दिव्य-आकर्षण

के 'प्रवाह' या 'प्रवृत्ति' के सिद्धान्त को ही —

**दैवीय धर्म** (Religion)
**कल्याण** (Evolution)
**'हुकुम'** (Divine will)

**कहा गया है।**

यह दैवीय '**धर्म**' समस्त सृष्टि के कण-कण मेa '**साथ लिखा**' हुआ है, तथा गुप्त रूप मेa आदि काल से युग-युगोa मेa, इकसार, गुप्त रूप से, '**हुकुम**' के प्रवाह मेa प्रकाशमान तथा प्रवृत्त है।

यह हुकुम-रूपी **दैवीय 'धर्म'** पुस्तकोa मेa नहीa लिखा जा सकता, क्योंकि यह 'दैवीय धर्म' —

सर्वज्ञ है
अक्षर रहित है
बोली रहित है
देश रहित है
पक्षपात रहित है

असीम है
सच है
अटल है
त्रुटि रहित है
सदैव है
गुप्त है
साथ लिखा है
द्वैत भाव से रहित है
तअस्सुब रहित है
दिमागी 'पकड़' से दूर है।

वनस्पति के बीजोa के अन्दर प्रविष्ट 'हुकुम' अनुसार ही, प्रत्येक बीज मेa से भिन्न-भिन्न पौधे — उगते, बढ़ते, प्रफुल्लित होते तथा फल देते हैं। परन्तु इनकी टहनियोa, पत्तियोa, फूलोa तथा आयु मेa भिन्नता होती है।

वनस्पति तथा अन्य योनियोa के जीवोa मेa, बुद्धि तथा चिaतन शक्ति सीमित होती है। जिस कारण वे अपनी चतुराईयाँ या उक्तियाँ/युक्तियाँ प्रयोग नहीं कर सकते तथा 'साथ लिखे' हुकुम रूपी **'धर्म' के गुप्त प्रवाह मेa दखल नहीa दे सकते।** इसलिए वे अपने-अपने 'साथ लिखे' **दिव्य 'धर्म' को सहज ही तथा अनजाने ही मानते व पालन करते रहते हैं।**

इस प्रकार वे **'हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि'** की पaक्ति का अनजाने तथा सहज-स्वभाव ही पालन कर रहे हैं, जिस कारण उनकी आत्मिक उन्नति (natural evolution) सहज ही हो रही है। **यही उनका अर्न्तमुखी 'साथ लिखा' हुआ 'निजी धर्म'** है।

उनके कल्याण के लिए, किसी बाहरी धर्म या मज़हब की आवश्यकता नहीa, तथा न ही किसी 'प्रचार' की।

ये योनियाँ **'हुकुम रजाई चलणा'** के इलाही गुप्त, त्रुटिरहित, अपने-अपने 'धर्म' का अनजाने, भोले भाव तथा ईमानदारी से, पालन कर रही हैं।

यह योनियाँ — न हिन्दू, न मुसलमान, न ईसाई, न मुसाई हैं। यह केवल अपने कर्त्ता द्वारा प्रदान किये हुए **'चिन्होa'** मेa, अपने-अपने अन्तर्गत साथ लिखे **'निजी धर्म'** का पालन कर रही हैं।

जब बच्चे का, माँ की कोख मेंa गर्भ स्थापन होता है, तो साथ लिखे ईश्वरीय **'हुकुम'** अनुसार, उस बच्चे का पेट मेंa अनोखे तथा आश्चर्यजनक ढंaग से 'पालन' होता है। बच्चे की इस गुप्त करामाती 'परवरिश' के विषय मेंa माँ को कोई ज्ञान नहींa होता तथा न ही उसकी कोई सयानप काम करती है तथा बच्चे को भी अपनी परवरिश के विषय मेंa कोई ज्ञान नहीं होता ।

बच्चे का पेट की तीव्र जठर-अग्नि मेंa गर्भ मेंa आना, बढ़ना, प्रफुल्लित होना, बचाव तथा परवरिश होनी ही, अत्यaत आश्चर्यचकित करने वाला **विस्मादमयी दिव्य कौतुक** है, जिसमेंa न 'माँ' की तथा न ही बच्चे की कोई चतुराई, दखल-अaदाजी तथा उद्यम काम करता है।

यह सम्पूर्ण दिव्य 'करामात पूर्ण खेल' वीर्य के एक 'कण' (sperm) के अन्तर्गत 'साथ ही' लिखा था, जो पेट के अन्दर —

चुप-चाप
गुप्त रूप मेंa
अनजाने
भोले भाव
सहज स्वभाव
स्वतः

किसी **'दिव्य' शक्ति के गुप्त 'प्रवाह' या 'दैवीय हुकुम'** का आश्चर्यचकित करने वाला कौतुक है, जिसकी ओर —

ध्यान देने के लिए
विचार करने के लिए
मूल्यांकन के लिए
आश्चर्यचकित होने के लिए
धन्यवाद करने के लिए
विस्माद मेंa आने के लिए

हमारे पास फुरसत ही नहींa तथा न आवश्यकता ही प्रतीत होती है।

गुरबाणी मेंa इस कौतुक पर **विस्मादित होने तथा शुक्राना** करने के लिए यूँ प्रेरणा दी है —

रमईआ के गुन चेति परानी ।।
कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ।।
जिनि तूa साजि सवारि सीगारिआ ।।
**गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ।।**
बार बिवसथा तुझहि पिआरे दूध ।।
भरि जोबन भोजन सुख सूध ।।
बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ।।
मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ।।
इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ।।
बखसि लेहु तउ नानक सीझै ।। (पृ २२६)

जब बच्चे का जन्म होता है, तो माँ अपने बच्चे के पालन-पोषण, खुशहाली, विद्या आदि की योजनाएँ बनाती है तथा शुभ कामनाओa व आशीषेa भरा प्यार देती रहती है, तथा अपने बच्चे पर निछावर होती हुई हर प्रकार की कुरबानी देती है ।

पेट मेa बच्चे के 'गर्भ-स्थापन' से लेकर, जन्म उपराqत भी, बच्चे के लिए जो 'माँ-प्यार' उत्पन्न होता है, वह उस 'जीव' के लिए **ईश्वरीय प्रेम का ही प्रतिबिम्ब** है ।

इस प्रकार —

माँ-प्यार का अqकुरण
माँ के उदर मेa गुप्त पालन होना
अत्यन्त पीड़ मेa जन्म देना
वक्ष मेa दूध भर आना
प्यार से परवरिश करनी
शुभ इच्छक होना
लाड लडाना
खेल खिलाना
बलिहारी जाना
कुरबान होना

आदि, ये समस्त 'माँ-प्यार' की सूक्ष्म प्रेम भावनाएँ, माँ के हृदय मेa 'हुकुम-रूपी' ईश्वरीय 'धर्म' का ही —

प्रकाश है
प्रकटाव है

प्रवृत्ति है

प्रतीक है।

परन्तु माँ इस 'साथ लिखे हुकुम' रूपी 'दैवीय प्रेम' से **अज्ञात** होती है तथा बच्चे को अपना समझ कर, **'मोह-ममता' मेa फँसी रहती है**।

दूसरे शब्दोa मेa, इस साथ लिखे 'हुकुम' अनुसार, प्रत्येक जीव की भलाई तथा परवरिश के लिए, पहले से ही समस्त प्रबन्ध हो चुके होते हैं तथा प्रवृत्त हो रहे हैं।

हमारे शरीर के अनेक अaग हैं, जैसे दिमाग, आँखें, नाक, फेफड़े, दिल, कलेजा, गुर्दे, हड्डियाँ, माँस, नाड़ियाँ, नसेa आदि। यह सभी 'अaग' एक-दूसरे पर आश्रित (dependent), सaबन्धित तथा सहयोग से, दिन-रात, सोते-जागते, अनजाने, भोले भाव, स्वतः, सहज-स्वभाव किसी गुप्त, अवर्णनीय, सम्पूर्ण, असीम, अबोल, अलिखित, ईश्वरीय 'हुकुम' के प्रवाह मेa चुप-चाप ही काम कर रहे हैं, जिससे हम बेखबर तथा बेपरवाह हैं।

'**फूल**' के बीज मेa साथ लिखे हुकुम' अनुसार पौधा पनपता है।

उस पौधे के —

तेa

टहनियेa

पत्तेa

काँटेa

फूल

तथा, उस के —

आकार

बनावट

पँखुड़ियाa

रंग

महक

मिठास

उम्र

ऋतु

आदि, भिन्न-भिन्न प्राकृतिक गुणोa के प्रकटाव के लिए, ईश्वरीय 'हुकुम' बीज के

अन्दर, गुप्त रूप मेa चुप चाप ही प्रवृत्त हो रहा है।

इस हुकुम के प्रकटाव या 'प्रवाह' के लिए, किसी बाहरी दिमागी चतुराई के 'हस्तक्षेप' या मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं।

दूसरे शब्दों में, सृष्टि के सभी 'जीव' अपने कर्त्ता, अकाल पुरुष के अटल, त्रुटि रहित, सर्वज्ञ, असीम 'हुकुम' के मार्गदर्शन तथा 'प्रवाह' मेa, उत्पन्न होते, प्रफुल्लित होते तथा '**विलीन**' होते हैं। इस प्रकार वे अपने अन्दर 'साथ लिखे' हुकुम को अपने जीवन मेa, चुप चाप ही मानते तथा अनुसरण करते हैं।

उपरोक्त उदाहरणोa द्वारा स्पष्ट होता है, कि इस 'साथ लिखे' हुकुम को मानना तथा पालन करना ही, उनका **'साथ लिखा' 'निजी धर्म' 'मज़हब' या 'परमार्थ'** है, जिसे समझने, सीखने, धारण करने की आवश्यकता नहीं तथा न यह धर्म बाहर से किसी प्रकार उनको सिखाया, समझाया तथा 'थोपा' जा सकता है।

इस प्रकार, यह 'साथ लिखा' **गुप्त 'धर्म'**, प्रत्येक जीव के लिए —

'जीवन दिशा है
'निजी धर्म' है
'सम्पूर्ण ईश्वरीय नियम' है
'लोक सुखी' है
'परलोक सुहेला' है
'अन्तर आत्मिक' बीज है
'अन्दर से ही उत्पन्न होता है
ओत प्रोत समाया है
बाहरी धर्मोa से आज़ाद है
कर्म-काण्डोa से मुक्त है
बुद्धि की पकड़ से दूर है
बरिश्श है
गुर प्रसादि है
अबूझ है
असीम है
त्रुटि रहित है।

चौरासी लारव योनियाँ अपने अन्दर 'साथ लिखे' ईश्वरीय 'धर्म' के 'प्रवाह' के वेग मेa सहज ही बहते हुए, अनजाने ही अटूट सिमरन कर रही हैं तथा **अपने-अपने**

**निजी धर्म का पालन कर रही हैं** । इस प्रकार उनका 'सिमरन' — 'जीवन-रूप' हो जाता है ।

सिमरै धरती अरु आकासा ।। सिमरहि चaद सूरज गुणतासा ।।
पउण पाणी बैसaत्तर सिमरहि सिमरै सगल उपारजना ।।
(पृ १०७८)

हरि सिमरनि धारी सभ धरना ।। (पृ २६३)

प्रतिपालै जीअन बहु भाति ।।
जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ।। (पृ २९२)

यह 'जीवन-क्रिया' किसी अकथनीय तथा गुप्त 'चुप-प्रीत' की सूक्ष्म प्रीत-डोरी की 'चाल' है, जो दिव्य 'स्रोत' की ओर जीव को सदैव 'आकर्षित' कर रही है ।

यह अन्तर-आत्मिक 'प्रीत-डोरी' का आकर्षण या जीवन-रौa की सहज-चाल ही, प्रत्येक जीव का अपना-अपना '**निजी आत्मिक धर्म**' है ।

अल्प बुद्धि के कारण, चौरासी लारव योनियाँ अपने अन्दरूनी 'साथ' लिरवे 'ईश्वरीय धर्म' से अनजान हैं । **यह अज्ञानता, उनके लिए कल्याणकारी तथा गुप्त कृपा है ।**

वे अपने ईश्वरीय 'हुकुम-रूपी' साथ लिरवे 'धर्म' का भोले-भाव तथा **अनजाने ही पालन कर रही हैं ।**

उन्हेa अपने 'धर्म' की कमाई का मनुष्योa की भाaति **'अहaकार' नहीं होता ।**

सहज-स्वभाव ही '**सaच-शुक्र**' मेa रहते हैं तथा 'प्रभु आज्ञा' मानते हैं, मनुष्य की भाaति किन्तु-परन्तु, शिकायत, रोष आदि नहीa करते ।

अपने अन्दरूनी दैवीय धर्म, के पालन द्वारा, उनकी आत्मिक उन्नति सहज ही होती रहती है ।

इस प्रकार उनकी **अज्ञानता ही उनके लिए कल्याणकारी होती है ।**

मनुष्य की भाँति वे सयानप-चतुराईयाँ दिखा कर, अपने ईश्वरीय धर्म से 'विमुख' नहीa होते ।

इसीलिए वे अपने कमोZa के परिणामोa से '**मुक्त**' हैं ।

तब तो स्पष्ट है, कि चौरासी लाख योनियाँ अपने-अपने अन्तर्गत 'हुकुम' की **'सहज-चाल'** मेa, चुपचाप तथा अनजाने ही प्रवृत्त होकर, अपने 'साथ लिखे' दैवीय 'धर्म' का पालन कर रही हैं तथा अपने कर्त्ता अकाल-पुरुष की 'आज्ञा' मेa, अपना जीवन सफल कर रही हैं।

इस लिए उपरोक्त विचारोa से स्पष्ट है कि ईश्वरीय हुकुम-रूपी, साथ अन्तर्गत लिखे, **'धर्म' मेa** —

पक्षपात
वैर-विरोध
ईर्ष्या-द्वेष
नफरत
**तअस्सुब**
टकराव
झगड़े
लड़ाईयोa

की कोई गुaजाइश ही नहीa।

यही कारण है, कि चौरासी लाख योनियोa मेa, **'मज़हबी तअस्सुब'** (धर्मान्धता) **की आड़ मेa कोई** :—

खींचातान
शोर-शराबा
खून-खराबा
अत्याचार

**नहीa हो सकता।**

इन योनियोa मेa से गुजरता हुआ 'जीव' जब शिरोमणि मनुष्य योनि मेa आता है, तब अकाल पुरुष, मनुष्य को विशेष बख्शिशेa प्रदान करता है :—

1. मनुष्य को ईश्वर ने **'अपने-स्वरूप'** मेa बनाया है।
   मन तूa जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥ (पृ. ४४१)
2. मनुष्य को असीम **तीक्ष्ण-बुद्धि** प्रदान की है, ताकि वह —
   अपने **'आत्मन'** को पहचान सके।
   अपने **'कर्त्ता'** को पहचान सके।
   अपने हुकुम-रूपी **'धर्म'** को पहचान सके।

अपने 'जीवन' को सही **आत्मिक मार्गदर्शन** दे सके ।
आवागमन के **'चक्र'** से बच सके ।
अपने 'कर्त्ता' अकाल पुरुष मेa पुनः **'समा'** सके ।
ईश्वर द्वारा प्रदान बरिश्शेशa का उचित प्रयोग कर सके ।

इस तथ्य को गुरबाणी मेa यूँ दर्शाया गया है —

अकलि एह न आखीऐ अकलि गवाईऐ बादि ।।
अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मानु ।।
अकली पढ़ि कै बुझीऐ अकली कीचै दानु ।।
नानकु आखै राहु एहु होरि गलाa सैतानु ।। (पृ १२४५)

3. शेष समस्त योनियोa का **'सिरताज'** बनाया है ।
सगल जोनि महि तू सिरि धरिआ ।। (पृ ९१३)

लखव चउरासीह जोनि सबाई ।।
माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ।। (पृ १०७५)

लखव चउरासीह जूनि विचि उतमु जूनि सु माणस देही ।

(वा. भा. गु. १५/१३)

4. समस्त सृष्टि की अनगिनत 'बरिश्शेशa' प्रदान की हैं ।
देदे तोटि नाही प्रभ रaगा ।। (पृ ९९)

तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बaदा ।।.....
लखव चउरासीह मेदनी सभ सेव करaदा ।। (पृ १०९६)

5. मनुष्य के शारीरिक तथा मानसिक सुख के लिए अनगिनत नाना प्रकार के मायिकी साधन प्रदान किये हैं ।

अगनत साहु अपनी दे रासि ।।
खात पीत बरतै अनद उलासि ।। (पृ २६८)

सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ।।
सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ।। (पृ २९०)

6. मनुष्य के कल्याण के लिए आवश्यकता अनुसार अनेक **'धर्म'** प्रचलित किये हैं । इन धर्मो के प्रचार के लिए तथा सही आत्मिक दिशाज्ञान देने के लिए,

अनगिनत उपदेश तथा दैवीय वाणियोa की रचना की गयी है। भूले-भटके जीवोa के **सही 'मार्ग-दर्शन'** के लिए अनेक गुरू, अवतार, पीर, पैगम्बर, साधू, सaत, भक्त **दुनिया मेa भेजे गए।**

हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलaदी ॥
जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की
जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ ॥ (पृ. ७९)

साध पठाए आपि हरि हम तुम ते नाही दूरि ॥ (पृ. ९२९)

जुगि जुगि सaत भले प्रभ तेरे ॥
हरि गुण गावहि रसन रसेरे ॥ (पृ. १०२५)

आश्चर्य की बात यह है कि जहाँ सीमित बुद्धि वाली चौरासी लाख योनियाँ तो ईश्वरीय बख्शिशोa से अनजान होते हुए भी, उन उपहारोa का पूरा-पूरा लाभ उठा रही हैं तथा सहज-स्वभाव अपने कल्याण का उपाय कर रही हैं।

वहाँ अत्यaत तीक्ष्ण बुद्धि वाला 'मनुष्य', समस्त योनियोa का शिरोमणि होते हुए भी, अपने दिव्य उद्देश्य से अनजान, बेपरवाह, विमुख होकर, **रसातल की ओर बहता जा रहा है।**

इस विषय को गुरबाणी यूँ दर्शाती है —

पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहaकारा ॥ (पृ. १४०)

दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥ (पृ. ६७६)

देवनहार दातार प्रभ निमख न मनहि बसाइ ॥
लालच झूठ बिकार मोह इआ सaपै मन माहि ॥ (पृ. २६१)

हमारा अहम् ग्रस्त मन, परमेश्वर द्वारा प्रदान की गयी तीक्ष्ण बुद्धि तथा निर्णय शक्ति का गलत प्रयोग करता है तथा अनेक उक्तियाँ-युक्तियाँ, चतुराईयाँ दिखा-दिखा कर, अपने साथ लिखे 'हुकुम' या 'धर्म' के **प्रवाह से 'बेसुर'** होकर, अपनी ही 'रजा' मेa विचरण करता है तथा **दैवीय 'प्रीत-तार' से टूट जाता है।**

'भ्रम-भुलाव' मेa हमारी 'निर्णय-शक्ति' मaद या मलिन हो जाती है, जिस कारण, हम अच्छे-बुरे का निर्णय या परख करने मेa असमर्थ हो जाते हैं तथा अनजाने ही अनेक प्रकार के पाप अर्जित करते रहते हैं।

इस प्रकार हम अपने अहम् को चारा डाल कर उसे **सुदृढ़** करते है तथा साथ ही साथ हमारे भ्रम-भुलाव का पर्दा भी मोटा होता जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप हम हुकुम-रूपी 'ईश्वरीय धर्म' से और भी दूर चले जाते हैं।

अफसोस की बात तो यह है कि —

इतनी तीक्ष्ण बुद्धि

अनेक धर्मो

अनेक धर्मग्रन्थोa

अनगिनत धार्मिक मन्दिरोa

अत्यक्त धर्मप्रचार

अत्यक्त ज्ञान-ध्यान

अत्यक्त पाठ-पूजा

अनगिनत जप-तप तथा कर्म क्रिया

अनगिनत हठ योग साधनाएँ

अनगिनत धार्मिक मार्गदर्शकोa

के होने के बावजूद, मनुष्य को अपने —

आत्मन

कर्त्ता

ईश्वरीय धर्म

'साथ लिखे' 'धर्म'

सही जीवन लक्ष्य

कल्याण

के विषय मेa कोई '**ज्ञान**' **नहीa हो सका** तथा मनुष्य अपने दैवीय अस्तित्व को भुलाकर, रसातल की ओर बहता जा रहा है तथा शेष समस्त अज्ञानी योनियोa से भी तुच्छ, मलिन तथा दुखदायी जीवन व्यतीत कर रहा है।

मनुष्य की इस दयनीय तथा दुखदायी अधोगति के कारणोa की खोज-विचार करने की आवश्यकता है ।

अकाल पुरुष ने मनुष्य को अपने स्वरूप मेa रच कर, अपनी समस्त शक्तियाँ प्रदान की हैं ।

जहाa अकाल पुरुष ने मनुष्य को अनगिनत शक्तियाँ प्रदान की है, वहाँ अहम् का '**भ्रम-भुलाव**' भी डाल दिया है, जो अति प्रबल, दीर्घ तथा सूक्ष्म है ।

हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ।। (पृ. ४६६)

जिनि रचि रचिआ पुरखि बिधातै नाले हउमै पाई ।। (पृ. ९९९)

इस अहम् के भ्रम-भुलाव के कारण हम —

अपने 'आत्मन को नहीa बूझ सकते ।
अकाल पुरुष की हस्ती पर निश्चय नहीa होता ।
ईश्वरीय हुकुम को नहीं बूझ सकते ।
**साथ लिखे धर्म से अनजान रहते हैं ।**
ईश्वरीय बरिश्शोa का पूर्ण आनन्द नहीं ले सकते ।
अपनी जीवन-दिशा का पता नहीं लगता ।
आत्मिक विरासत से वaचित रहते हैं ।
हमारे कर्म 'अहम्' के अधीन होते हैं ।
इन 'अहम् ग्रस्त कर्मों' का परिणम भोगते हैं ।
जन्म-मरण के चक्र मेa बार-बार फँसते हैं ।

भरमे आवै भरमे जाइ ।। इहु जगु जनमिआ दूजै भाइ ।।
मनमुखि न चेतै आवै जाइ ।। (पृ. १६१)

भरमे भूला फिरै सaसारु ।।
मरि जनमै जमु करे खुआरु ।। (पृ. ५६०)

साधो इहु जगु भरम भुलाना ।।
राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ।। (पृ. ६८४)

बिनु नावै भ्रमि भ्रमि भ्रमि खपिआ ।। (पृ. ११४०)

अहम् के **'भ्रम-भुलाव'** के कुछ उदाहरण प्रस्तुत है :—

1. थीयेटर (theatre) मेa कई कलाकार होते हैं, जो कई प्रकार की भूमिका

(role) अदा करते है। रंगमंच पर उनकी प्रत्येक हरकत, अदा, बोलचाल आदि मालिक की किसी पूर्व निश्चित योजना अनुसार नियम-बद्ध होती है। स्टेज पर कोई राजा, कोई रानी, कोई नौकर, कोई दाता, कोई भिखारी आदि, अनेक वेष धारण करके, अपना-अपना 'पार्ट' अदा करते हैं। प्रत्येक को निश्चय होता है कि वास्तविकता में वे राजा-रानी आदि नहीं हैं, अपितु क्षण भंगुर स्टेज पर अपना नियत 'पार्ट' अदा करने ही आये हैं तथा वास्तव में वह अपने मालिक के नौकर ही हैं। उन्हें यह अहसास होता है कि वह 'स्वतन्त्र' नहीं हैं, अपनी मनमर्जी नहीं कर सकते। परन्तु यदि कोई 'पात्र' अपने मालिक को 'भूल' कर या बागी होकर, स्टेज पर अपनी **मन-मर्जी करता है, तो समस्त खेल में विघ्न पड़ जाता है, जिस की उसे सजा मिलती है।**

ठीक इसी प्रकार इस सृष्टि के मालिक '**अकाल पुरुष**' ने, अपने असीम 'हुकुम' द्वारा, यह सारंसारिक 'विराट नाटक' रचा हुआ है, जिस में हम समस्त जीव, अपना-अपना 'पार्ट' अदा करने आये हैं।

ईमानदारी से, इस 'हुकुम-रूपी' प्रभु आज्ञा के **प्रवाह में चलना ही, हमारे साथ लिखे दिव्य 'धर्म का पालन है।**

जब तक हम अकाल-पुरुष की दैवीय योजना में 'हुकुम' की रज़ा में अपना-अपना 'पार्ट' अदा करते हैं, तब तक ईश्वरीय 'खेल-अखाड़ा' निर्विघ्न चलता है तथा 'कलाकार' अथवा '**जीव को सम्मान मिलता** है।

परन्तु, जब जीव अपने 'मालिक' अकाल पुरुष को भूल जाते हैं या **विमुख हो जाते हैं**, तब वे 'मोह-माया' की अज्ञानता में '**अहम्' के अधीन स्वयं ही 'मालिक' तथा कर्त्ता-धर्त्ता बन बैठते हैं और मन-मर्जी करते हैं।**

इसी कारण जीव ईश्वरीय बख्शिशों से **वंचित रहते है तथा कर्म बद्ध होकर, मायिकी नियम अनुसार दुख-सुख भोगते हैं।**

जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ॥ (पृ ४३३)

आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै ॥ (पृ ६०२)

आपन करम आपे ही बंधु ॥
आवनु जावनु माइआ धंधु ॥ (पृ ८८८)

2. बिजली का करंट **'पावर हाउस'** में उत्पन्न होता है। यह बिजली प्रत्येक 'बल्ब' में प्रकाश देती है। बल्ब के अंदर 'फिलामैन्ट' की सूक्ष्म तार होती है, जिसके द्वारा बिजली का प्रकाश होता है। उसके चारों ओर अनेक रंग तथा आकार वाले शीशे का आवरण चढ़ा होता है। जब इसमें करंट आता है, तो यह **'जग'** उठता है या **जीवित हो जाता है,** नहीं तो यह बुझ जाता है अथवा **'मुर्दा'** हो जाता है।

बल्ब को जीवन, 'करंट' से मिलता है तथा करंट 'पावर हाउस' से आता है। बल्ब का अपने आप में कोई अस्तित्व नहीं है, इसका अस्तित्व **'करंट के द्वारा' बनता है।**

इसी प्रकार, जीवन-प्रकाश का **'स्रोत'** अथवा पावर हाउस, **'नाम'** या **'शबद'** ही है।

यदि बल्ब अपने **'जीवन प्रकाश'** के स्रोत को 'भुला' कर या 'झुठला' कर, अपना **पृथक 'अस्तित्व समझे,** तो वह 'झूठा' है, 'पाखण्डी' है तथा उसके अहम् का अस्तित्व कूड़ है। वास्तविक हस्ती तो 'अकाल पुरुष' है तथा उस में से उत्पन्न नाम का प्रकाश ही जीव-रूपी 'बल्ब' का साथ लिखा, हुकुम-रूपी **'ईश्वरीय धर्म'** है।

ठीक इसी प्रकार अकाल पुरुष की एक मात्र 'हस्ती' है, जिस में से जीवन रूपी 'ज्योति', प्रत्येक जीव की अन्तर आत्मा में प्रकाशमान तथा प्रवृत हो रही है। परन्तु माया रूपी भ्रम-भुलाव की अज्ञानता में, जीव को यह भ्रम है, कि वह अपने आप में कोई पृथक हस्ती है तथा स्वयं ही सम्पूर्ण कर्त्ता-धर्त्ता है, जिस कारण उसके जीवन के प्रत्येक पक्ष में मैं-मेरी का प्रकटाव तथा व्यवहार हो रहा है।

पहले बताया जा चुका है कि दैवीय 'हुकुम' ही नाम की जीवन-रौं **ईश्वरीय 'धर्म' की गुप्त 'सहज-चाल'** है।

ईश्वरीय 'हुकुम', 'नाम' या साथ लिखा 'निजी धर्म', कण-कण में परिपूर्ण है।

जिस प्रकार बिजली का करंट तो एक ही होता है, परन्तु उस के प्रकटाव के बाहरी साधन, बल्ब, ट्यूब आदि अनेक यन्त्र होते हैं, जिनके द्वारा प्रवाहित 'करंट', उनकी रंगत अनुसार — लाल, पीला, नीला प्रकाश देता है।

इसी प्रकार पानी तो एक ही होता है, परन्तु इसमें जो वस्तु मिलायी जाती है, उसी अनुसार पानी का रंग तथा स्वाद बनता है।

ठीक इसी प्रकार 'जीवोa' मेa ईश्वरीय 'जीवन रौं' तो एक ही प्रवृत्त है, परन्तु मन, बुद्धि तथा अन्तःकरण की रaगत अनुसार, इस जीवन रौं का **बाहर-मुख प्रकटाव भिन्न-भिन्न होता है ।**

इस का तात्पर्य यह है कि 'जीवन-रौं' के प्रकाश तथा प्रकटाव के दो पक्ष हैं —

1. अन्तर-मुख गुप्त 'सहज चाल' — जो पूर्णतया निर्मल, 'नाम' 'हुकुम' तथा साथ लिखा निजी धर्म है ।

2. **बाहर मुख प्रकटाव** —

जिस पर —

अहम् ग्रस्त मन
अहम् ग्रस्त बुद्धि
अन्तः करण

**का 'अक्स' या रaग चढ़ा हुआ होता है ।**

इन दोनोa परिस्थितियोa मेa, ईश्वरीय 'जीवन-रौं' के सयुक्त प्रवाह को ही, भिन्न-भिन्न जीवोa का **'साथ लिखा'** हुआ **'दैवीय धर्म' कहा गया है ।**

(क्रमश..... )